Chap-5

पंचम अध्याय

*
:
:
:
:
:
:
:
:
:
:
:

शोध विधि का विस्तार

शोध विधि

शोध कार्य के विस्तार में शोध विधि का प्रमुख स्थान होता है । इसीकी सहायता से शोधकार्य एक निश्चित रुप ग्रहण करता है । किसी शोधकार्य के सम्पन्न में उद्देश्य का महत्वपूर्ण स्थान होता है । शोधकर्ता अपने उद्देश्य की पूर्ति करने विभिन्न शोध साधनों की सहायता लेता है ।

प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्ता ने निम्न शोध-साधनों की सहायता ली है । इस शोधकार्य में ये साधन प्रमुख स्थान रखते हैं दूसरे अर्थ में ये साधन रक्त की शिरायें है जिनसे हृदय रुपी शोधकार्य मज़बूत होता है ।

(1) प्रश्नावली (2) भाषा उपलब्धि-परीक्षण

(3) मौखिक साक्षात्कार

प्रप्रथम शोधकर्ता ने 100 अनुभवी हिन्दी अध्यापकों को आन्ध्र प्रान्त के 8 जिलों से चयन करके उनका व्यक्तिगत साक्षात्कार किया है । उनसे शोधकर्ता ने 8वीं कक्षा में द्वितीय भाषा के रुप में हिन्दी पढ़नेवाले छात्रों के हिन्दी अध्ययन में उनके सामने आनेवाली विभिन्न कठिनाइयों एवं समस्याओं पर चर्चा की है । इन चर्चित विषयों को शोधकर्ता ने प्रश्नावली निर्माण में लिया है । प्रश्नावली वैज्ञानिक बनने में अनुभवी हिन्दी अध्यापकों का व्यक्तिगत साक्षात्कार अत्याधिक उपयोगी सिद्ध हुआ है ।

उपयुक्त साधनों की सहायता से शोधकर्ता ने अपने शोधकार्य सम्पन्न किया है ।

शोधकर्ता ने शोधसाधनों के निर्माण में अत्यन्त जागरुकता का पालन किया है । इन साधनों के निर्माण में औचित्य तथा विश्वसनीयता का पालन किया गया है ।

विभिन्न वैज्ञानिक सिद्धान्तों को शोधकर्ता ने इन साधनों के निर्माण में ध्यान रखा है । प्रत्येक साधन शोधकर्ता के उद्देश्यपूर्ति में पूर्ण रुप से सक्षम है । विषय एवं उद्देश्य पूर्ति में ये साधन एक दूसरे से निकट सम्बन्ध रखते हैं ।

शोध-साधनों का निर्माण :

शोध साधनों के चयन में शोधकर्ता ने जिस सतर्कता का पालन किया है उन साधनों के निर्माण में भी अत्यन्त जागरूकता एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण को अपनाया है । यहाँ पर शोधकर्ता ने प्रमुख साधनों का निर्माण संक्षिप्त रूप से बता देना उचित समझा है ।

(1) प्रश्नावली (2) भाषा उपलब्धि-परीक्षण (3) मौखिक साक्षात्कार

इस शोधकार्य का उद्देश्य पहले ही विदित किया गया है । आन्ध्र प्रान्त के आठवीं कक्षा में पढ़नेवाले द्वितीय भाषा हिन्दी छात्रों के भाषा अधिगम संबंधी कठिनाइयों एवं समस्याओं का अध्ययन करना है ।

इसके लिए शोधकर्ता ने आन्ध्र प्रान्त (8 सरकार जिलों) में 10 साल के अध्यापन अनुभव रखनेवाले 100 हिन्दी अध्यापकों से व्यक्तिगत साक्षात्कार किया है । यह साक्षात्कार शोधकर्ता को आन्ध्र प्रान्त के हिन्दी अध्यापकों को प्रश्नावली का निर्माण करने में सहायक सिद्ध हुआ है ।

इसके अतिरिक्त शोधकर्ता ने आन्ध्र प्रदेश सरकार के माध्यमिक परिषद् के द्वारा संचालित एस्० एस्० सी० परीक्षा में आन्ध्र प्रान्त के छात्रों से प्राप्त हिन्दी अंकों को भी विषय को सार्थी बनाने के लिए ध्यान में रखा है ।

इसके साथ ही साथ उन विचारों को भी ध्यान में रखा गया है जिनको

1966 में "अहिन्दी भाषा-भाषियों को हिन्दी सीखने तथा सिखाने के सम्बन्ध में एक सेमिनार केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा में हुआ था जिसमें विद्वत्गणों ने इन समस्याओं पर अपने विचार प्रकट किये थे ।

अनुभवी हिन्दी अध्यापकों से औपचारिक दृष्टि से व्यक्तिगत साक्षात्कार किया गया । शोधकर्ता ने उनसे वार्तालाप कर निम्न विषयों को आधार माना है ।

1) राष्ट्रभाषा की समस्या
2) आन्ध्र प्रदेश सरकार की भाषा-नीति
3) प्रशासन में हिन्दी का स्थान
4) आन्ध्र प्रान्त में हिन्दी वातावरण
5) हिन्दी अध्ययन के प्रति छात्रों का दृष्टिकोण
6) छात्रों का हिन्दी स्तर
7) भाषा अधिगम समस्या
8) हिन्दी का पाठ्यक्रम
9) पाठ्यपुस्तक
10) शिक्षण-विधि
11) सहायक-सामग्री
12) हिन्दी अध्यापक
13) मूल्यांकन आदि ।

इन अनुभवी अध्यापकों के चयन में उनकी साधारण एवं विशिष्ट शैक्षणिक योग्यता को ध्यान में रखा गया है । व्यक्तिगत भेंटवार्ता में अधिक संख्यक हिन्दी अध्यापकों की मान्यताओं को ही प्रश्नावली में स्थान दिया गया है । प्रत्येक जिले के नगरीय एवं ग्रामीय पाठशालाओं में 8वीं कक्षा को हिन्दी पढ़ानेवाले अध्यापकों को ही इसमें समान रूप से स्थान दिया गया है ।

1 प्रश्नावली :

शोधकार्य में प्रश्नावली का निर्माण पर्याप्त सतर्कता एवं अत्यंत जागरुकता

से करना होता है । शोधकर्ता को इसके निर्माण में सभी शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों को जानना आवश्यक होता है । प्रश्नावली एक ऐसा साधन है जिनसे शोधकर्ता के पूर्ण एवं आंशिक उद्देश्य की पूर्ति सक्षमता से होती है ।

प्रस्तुत शोधकार्य की प्रश्नावली के निर्माण में शोधकर्ता ने मार्गदर्शक की पूर्ण सहायता ली हैं । यह प्रश्नावली आन्ध्र प्रान्त में 8वीं कक्षा को द्वितीय भाषा के रूप में हिन्दी पढ़ानेवाले अध्यापकों के लिए निर्माण की गई है ।

आन्ध्र प्रान्त (तटवार जिलों) के 8वीं कक्षा के छात्र हिन्दी में क्यों कमजोर हैं और हिंदी सीखते समय उनके सामने किन किन कठिनाइयों और समस्याओं का सामना करना पड़ता है इनका अध्ययन करना इस शोधकार्य का मुख्य उद्देश्य है ।

अतः शोधकर्ता ने एक प्रश्नावली के द्वारा आन्ध्र प्रान्त के आठवीं कक्षा को हिन्दी पढ़ानेवाले अध्यापकों से छात्रों को पढ़ाते समय किन किन कठिनाइयों एवं समस्याओं का सामना करना पड़ता है इनको जानने का प्रयत्न किया है । अध्यापकों के ये विचार छात्रों के भाषा अधिगम सम्बन्धी विचारों को जानने में सहायक होता है ।

प्रश्नावली का निर्माण :

शोधकर्ता ने आन्ध्र प्रान्त के हिन्दी अध्यापकों के निमित्त निर्मित प्रश्नावली में आन्ध्र प्रान्त के अनुभवी हिन्दी अध्यापकों के व्यक्तिगत साक्षात्कार से प्राप्त विचार, केन्द्रीय हिन्दी शिक्षण संस्था, आगरा के सेमिनार में प्रकट किये अहिन्दी भाषा भाषी हिन्दी विद्वानों के विचार एवं एस्0 एस्0 सी0 में आन्ध्र प्रान्त के छात्रों की हिन्दी प्रगति से संबंधित अंक तालिकाओं को ध्यान में रखकर एक प्रश्नावली का निर्माण इस शोधकार्य के मार्गदर्शक की सहायता से किया गया है ।

प्रश्नावली की रुपरेखा :

प्रश्नावली के निर्माण में शोधकर्ता ने संबंधित शैक्षिक अनुसंधान ग्रन्थों का अध्ययन भी किया है ताकि शोधकर्ता पूर्व त्रुटियों से पूरा पूरा बच सके । इस प्रश्नावली को आन्ध्र प्रान्त में 8वीं कक्षा के छात्रों को द्वितीय भाषा के रूप में हिन्दी पढ़ानेवाले अध्यापकों के हेतु निर्माण किया गया है । प्रश्नावली में कुल 158 प्रश्न दिये गये हैं । प्रश्नावली के प्रथम पृष्ठ में शोधकर्ता का हिन्दी अध्यापकों से सविनय निवेदन है, जिसमें शोधकर्ता ने शोधकार्य के मुख्य उद्देश्य का निर्देश / स्पष्ट रूप से उल्लिखित किया है । यह हिन्दी अध्यापकों को सही उत्तर देने में मदद देता है । हिन्दी अध्यापकों को इस प्रश्नावली के उत्तर देने में प्रेरणा भी मिल सकती है ।

इसके साथ प्रश्नावली की पूर्ति उन हिन्दी अध्यापकों से करने की प्रार्थना की गई जो 8वीं कक्षा के छात्रों को हिन्दी द्वितीय भाषा के रूप में पढ़ाते हैं । यह प्रश्नावली उन अध्यापकों को नहीं भेजी गई है जो हिन्दी प्रदेशों से आकर आन्ध्र में बस गये हैं और आन्ध्र के हाईस्कूलों में द्वितीय भाषा के रूप में हिन्दी पढ़ाते हैं ।

प्रश्नावली को किस प्रकार भरें इसका निर्देशन प्रश्नावली के प्रथम पृष्ठ पर दिया गया है ।

उचित निर्देशों के बाद शोधकर्ता ने उद्देश्यों को दृष्टि में रखकर प्रश्नावली के प्रश्नों का निर्माण किया है । इस प्रश्नावली के निर्माण में शैक्षिक क्षेत्र ही प्रमुख है विभिन्न क्षेत्रों का स्पर्श गौण रूप से प्रमुख उद्देश्य की पूर्ति करने के हेतु किया गया है । प्रश्नावली के प्रश्नों का उत्तर वस्तुनिष्ठ रूप से देने के लिए कहा गया है ।

प्रश्नावली के प्रश्नों को विभिन्न भागों में वितरण किया गया है ।

1 व्यक्तिगत परिचय : आयु, लिंग, पाठशाला, शैक्षिक योग्यता, विशेष योग्यता, शैक्षणिक योग्यता, शिक्षण का अनुभव (हिन्दी तथा अहिन्दी क्षेत्रों में) विभिन्न भाषाओं की जानकारी, आदि प्रमुख हैं ।

इसके अतिरिक्त पुस्तकालय, पाठशाला की पत्र-पत्रिकाएँ, आर्थिक स्थिति सम्बन्धी प्रश्न भी पूछे गये हैं ।

2 राष्ट्रभाषा का स्थान : आन्ध्र प्रदेश सरकार की भाषा नीति आदि प्रश्न भी पूछे गये हैं ।

3 8 वीं कक्षा के अध्यापन सम्बन्धित प्रश्न :

भाग 'अ' :- इसमें छात्रों की संख्या, घण्टे, उत्तीर्ण प्रतिशत, छात्रों की रुचि, वातावरण, भाषा कौशल, व्याकरण का ज्ञान, हिन्दी पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तक शिक्षण विधि, सहायक सामग्री, हिन्दी अध्यापक एवं मूल्यांकन सम्बन्धी प्रश्न पूछे गये हैं ।

4 भाग 'क' :- इसमें आठवीं कक्षा को हिन्दी पढ़ाते समय अध्यापक किन किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है इनसे संबंधित प्रश्नों को चार विकल्प उत्तर देकर अध्यापकों से अपना मत प्रकट करने की प्रार्थना की गई है ।

5 भाग 'स' में भाग 'अ' और 'क' के प्रश्नों से सम्बन्धित सुझावों को अध्यापकों से हाँ, नहीं और संदिग्ध रूप देकर पूछा गया है । जिससे उत्तर की वस्तुनिष्ठता एवं सत्यता का सही भाव प्राप्त होता है ।

प्रश्नावली के इस भाग में के सुझावों को 'अध्यापकों के सुझाव' के रूप में ही स्वीकार किया गया है ।

प्रश्नावली के प्रश्न आयोजन में संपूर्ण शिक्षा मनोविज्ञान के सिद्धान्तों का पालन सही सही रूप से किया गया है । प्रश्नावली के प्रश्नों को क्रम से न होकर कहीं कहीं विषय परिवर्तन करके भी प्रश्नों की रचना की गई है । ऐसा करने से प्रत्युत्तरदाता को प्रश्न का उत्तर सोच समझकर देना पड़ता है । इस प्रकार के मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त का आधार भी लिया गया है ।

अध्यापकों के इन सुझावों को छात्रों की उपलब्धि एवं मौखिक-साक्षात्कार से प्राप्त सुझावों के साथ जोड़कर शोधकर्ता ने समस्या का समाधान गंभीर एवं वैज्ञानिक रूप से देने का प्रयत्न किया है ।

प्रश्नावली का वितरण एवं समय :

प्रश्नावली का वितरण आन्ध्र प्रान्त(सरकार जिलों) में 8 वीं कक्षा को हिन्दी द्वितीय भाषा के रूप में पढ़ानेवाले 480 अध्यापकों को डाक के द्वारा वितरण किया गया है । उत्तर लौटाने के लिए डाक टिकट भी भेजे गये हैं । प्रत्येक जिले से 60 अध्यापकों को, जिसमें नगरीय एवं ग्रामीय अध्यापक भी सम्मिलित हैं इनको समान रूप से भेजे गये हैं । इन अध्यापकों को 15 दिन में लौटाने की सूचना भी दी गई है । प्रान्त एक ही होने के कारण ज़िला परिषद्, सरकारी, सहायता प्राप्त, निजी पाठशालाओं में काम करनेवाले पुरुष एवं महिला हिन्दी अध्यापकों को प्रश्नावली भेजी गई हैं । इसमें विषय की विश्वसनीयता बनी रहती है ।

शोधकर्ता ने 480 कुल अध्यापकों में 262 अध्यापकों से प्रत्युत्तर प्राप्त किया है । प्रत्युत्तरदाताओं ने समय का पालन ठीक ढंग से किया है ।

मूल्यांकन :

शोधकर्ता ने प्रश्नावली का मूल्यांकन करते समय मूल्यांकन के सिद्धान्तों के प्रति पूर्ण ध्यान दिया है । प्रश्नावली वस्तुनिष्ठ होने के कारण मूल्यांकन सरल बन गया है । शोधकर्ता ने सही (✓) उत्तर को ही स्वीकार किया है । कुल प्राप्त उत्तरदाताओं की संख्या 262 है । उत्तरदाताओं के अधिक संख्यक उत्तर के प्रतिशत को ही मान्य समझकर स्वीकार किया गया है । कम से कम 40% प्रतिशत उत्तर को स्वीकार किया गया है, जो तुलना में सबसे अधिक हो ।

प्रश्नावली का उत्तर लगभग 55% अध्यापक देने के कारण ये उत्तर मूल्यांकन की दृष्टि से सत्य एवं मान्य हैं ।

भाषा उपलब्धि - परीक्षण

उपलब्धि-परीक्षण :

व्यक्ति अपने जीवन में जो योग्यता उपार्जित करता है उसे ही उपलब्धि कहते हैं । यह जन्मजात नहीं होती है, यह अनुभव एवं शिक्षा की देन है । अतः यह बाह्य वातावरण एवं अन्य सामाजिक तथ्यों पर निर्भर रहती है । "यह बुद्धि से भिन्न है, क्योंकि बुद्धि एक जन्मजात गुण है । यद्यपि इसमें उम्र, परिस्थिति एवं अन्य बाह्य कारणों से थोड़ा हेर फेर होता है लेकिन बुद्धि और उपलब्धि दोनों अलग अलग चीज़ है ।" (1) शिक्षा और मनोविज्ञान में बुद्धि और उपलब्धि की माप की अलग अलग पद्धतियाँ हैं ।

उपलब्धि-परीक्षण का उद्देश्य :

छात्र अपने अध्ययन के सिल सिले में कुछ खास शैक्षिक विषयों का अध्ययन स्कूल और कालेज में करता है । एक निश्चित अवधि तक वह इन विषयों को पढ़ता है और उसमें एक हदतक योग्यता प्राप्त करता है । इसे शैक्षिक उपलब्धि कहते हैं । फिर छात्र उन्हीं विषयों में आगे चलकर कोई खास ज्ञान एवं कुशलता प्राप्त करता है । अतः उपलब्धि-परीक्षण का काम इन्हीं विशेष ज्ञान एवं कुशलता को मापना है । शैक्षिक संस्थाओं में उपलब्धि परीक्षणों का महत्वपूर्ण स्थान है । ये अध्यापक एवं छात्र दोनों के भी उपयोगी है ।

इस विधि पर आधारित परीक्षण कार्यक्रमों के मुख्यतः दो उद्देश्य होते हैं । प्रथम, शिक्षकों, प्रशासकों एवं परामर्शदाता को छात्रों की समस्या एवं उनकी शैक्षणिक उन्नति से पूर्णतः अवगत रखने में सहायता करना ताकि वे छात्रों को उनकी जरूरत, रूचि एवं योग्यता के अनुसार निर्देशन दे सकें और दूसरे विद्यालय के प्रशासकों को, प्रशासन कार्य एवं पाठ्यक्रम में सुधार लाने तथा विद्यालय की शैक्षणिक क्षमताओं का पूर्णरूपेण मूल्यांकन के लिए सुनिश्चित एवं विश्वसनीय आधार देकर विद्यालय की उन्नति में सहायक होना । प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्ता ने आन्ध्र प्रान्त के आठवीं कक्षा में द्वितीय भाषा के रूप में हिन्दी पढ़नेवाले तेलुगु भाषा-भाषी छात्रों का उपलब्धि-परीक्षण उनकी पाठ्यपुस्तक हिन्दी भारत भाग-4 को आधार मानकर लिया है ।

हिन्दी विषय में छात्रों के स्तर को जानना और छात्र किस विषय में पिछड़े हुए हैं इसको दर्शाना इस परीक्षण का मुख्य उद्देश्य है ।

भाषा उपलब्धि-परीक्षण :

प्रस्तुत शोधकार्य में आन्ध्र प्रान्त की आठवीं कक्षा में पढ़नेवाले तेलुगु भाषा-भाषियों की द्वितीय भाषा हिन्दी में उपलब्धि-परीक्षण लिया गया है । इस परीक्षण

के निर्माण से पहले यह जानना आवश्यक है कि इसकी प्रामाणिकता क्या है ?

उपलब्धि - परीक्षण का प्रामाणीकरण :

प्रामाणिक उपलब्धि-परीक्षण उपलब्धि को मापने का एक यंत्र ही है । इस परीक्षण का स्तर प्रायः = उस व्यक्ति की कुशलता प्राप्ति के अनुसार ही होता है जिसका परीक्षण किया जाता है । इस तरह के परीक्षण में उपयुक्त नियम स्थिर कर लेते हैं । ये नियम अलग अलग ग्रेड, उम्र या समूहों के लिए अलग अलग होते हैं । ये नियम परीक्षण के दायरे के अन्दर ही रहते हैं । अन्य बातों का स्थान इसमें नहीं रहता है । इन बातों को दृष्टि में रखते हुए शोधकर्ता ने आन्ध्र प्रान्त में पढ़नेवाले तेलुगु भाषा-भाषी छात्रों के उपलब्धि-परीक्षण में निम्न नियम स्थिर किये हैं ।

1) उपलब्धि-परीक्षण का कार्य-क्षेत्र आन्ध्र प्रदेश का एक प्रान्त आन्ध्र प्रान्त है जिसको "सरकार जिलें" या "कोस्टल जिलें" भी कहते हैं ।

2) यह परीक्षण उन छात्र-छात्राओं के लिए निर्माण किया गया है जिनकी मातृभाषा तेलुगु होकर आठवीं कक्षा में द्वितीय भाषा के रुप में हिन्दी का अध्ययन करते हैं ।

3) इस परीक्षण के निर्माण में आन्ध्र प्रदेश सरकार से आठवीं कक्षा के लिए स्वीकृत पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तक की सहायता ली गई है । ये दोनों इस परीक्षण का प्रमुख आधार है ।

4) इस परीक्षण के अंतर्गत आन्ध्र प्रान्त की सरकारी, जिला परिषद्, नगरपालिका, संस्थागत तथा निजी पाठशालाओं में पढ़नेवाले छात्र-छात्राएँ सम्मिलित हैं । इनकी आयु 13 से 15 वर्ष के मध्यन्तर में है ।

5) प्रस्तुत उपलब्धि-परीक्षण आन्ध्र प्रान्त के ग्रामीण तथा नगरीय क्षेत्रों के छात्र-छात्राओं के लिए निमित्त है । प्रत्येक जिले से चार

पाठशालाओं का चयन किया गया है । उनमें से दो नगरीय (अरबन) क्षेत्रों से और दो ग्रामीय (रूरल) क्षेत्रों से लिये गये हैं । छात्र तथा छात्राओं की पाठशालाओं का चयन समान प्रतिशत में किया गया है ।

6) इस परीक्षण का निर्माण शोधकर्ता ने स्वयं भाषा उपलब्धि-परीक्षण के मापन के सिद्धान्तों के आधार पर किया गया है । परीक्षण का निर्माण कठिन एवं सरलता से दृष्टि में रखकर किया गया है । इसके निर्माण में शोधकर्ता ने मार्गदर्शक की संपूर्ण सहायता ली है ।

7) यह परीक्षण निबन्धात्मक एवं वस्तुनिष्ठ है । भाषा/उपलब्धि परीक्षण में कौशलों के परीक्षण की ओर विशेष ध्यान दिया गया है ।

8) उपलब्धि-परीक्षण के उत्तर पुस्तकों का संशोधन, स्वयं शोधकर्ता ने किया है । एकही व्यक्ति से अंक प्रदत्त होने के कारण यह परीक्षण प्रामाणिक है ।

9) इसमें छात्रों के सभी कौशलों के मापन का प्रयत्न किया है । लेखन कौशल प्रधान है । श्रवण, वाचन और भाषण का परीक्षण गौण रूप से किया गया है ।

उक्त नियमों को दृष्टि में रखकर उपलब्धि-परीक्षण का निर्माण किया गया है ।

उपलब्धि-परीक्षण के प्रश्न-पत्र का निर्माण :

उपलब्धि-परीक्षण लेते समय पहले हमें ध्येय को निश्चित कर लेना चाहिए । किस वर्ग या स्तर के छात्रों के किन कौशलों का मापन करना है । इसका निश्चय हमें पहले ही कर लेना आवश्यक है । अतः परीक्षण का ध्येय एक महत्वपूर्ण चरण है । जबतक अध्यापक के सामने कोई ध्येय नहीं रहेगा तबतक अध्यापक उपलब्धि-परीक्षण

का निर्माण नहीं कर सकता है । अतः उपलब्धि परीक्षण उद्देश्यपूर्ण होना चाहिए । अध्यापक छात्रों का परीक्षण लेकर यह निर्णय करेगा कि छात्रों को अमुक भाषा कौशलों में प्रगति किस स्तर की है । इस परीक्षण के द्वारा ही अध्यापक के सामने, एक निश्चित योजना का साक्षात्कार होता है । इस परीक्षण से छात्रों के सामने आनेवाली कठिनाइयों का ज्ञान अध्यापक प्राप्त करता है और इनको दूर करने के उपाय भी सोचता है । इस प्रकार उपलब्धि परीक्षण छात्रों की त्रुटियों को दूर करने का सुन्दर तरीका है ।

प्रस्तुत शोधकार्य में आठवीं कक्षा में पढ़नेवाले तेलुगु भाषा भाषी छात्रों की भाषा संबंधी उपलब्धि ज्ञान की जाँच की गई है । इसके लिए शोधकर्ता को यह जानना आवश्यक हो गया है कि आठवीं कक्षा में पढ़नेवाले छात्रों को हिन्दी का अपेक्षित ज्ञान कितना है । इसके लिए शोधकर्ता ने आन्ध्र प्रदेश सरकार से निर्धारित हिन्दी पाठ्यक्रम में आठवीं कक्षा के छात्रों के लिए कितना हिन्दी का ज्ञान अपेक्षित है जिसका अध्ययन किया है और इन छात्रों की निर्धारित पाठ्यपुस्तक के आधार पर उपलब्धि-परीक्षण का निर्माण किया है ।

उद्देश्य :

भाषा उपलब्धि-परीक्षण में विषय से अधिक मात्रा कौशल का महत्व होता है । साधारणतः भाषा उपलब्धि परीक्षण में निम्नलिखित उद्देश्य निश्चित किये जा सकते हैं ।

1) ज्ञान 2) अर्थ ग्रहण 3) भाषा कौशल 4) समालोचना
5) मौलिकता 6) अनुवाद ।

आन्ध्र प्रदेश सरकार ने भी आठवीं कक्षा के छात्रों से निम्नलिखित उद्देश्यों की अपेक्षा की है ।

1) छात्र साधारण-भाषा में अपने विचारों को प्रकट करके वार्तालाप करने के योग्य बने ।

2) छात्र हिन्दी की सरल पुस्तकें, पत्र-पत्रिकाएँ तथा रेडियो भाषण आदि पढ़कर या सुनकर समझ सके ।

3) छात्र स्पष्ट एवं शुद्ध रूप से लिख सके ।

इसके अतिरिक्त सरकार से निर्धारित पाठ्यक्रम में आठवीं कक्षा के छात्रों के अर्थग्रहण करने की शक्ति, व्याकरण ज्ञान, तेलुगु तथा हिन्दी के मुहावरों का तुलनात्मक अध्ययन आदि की अपेक्षा की है ।

इन उद्देश्यों को दृष्टि में रखकर शोधकर्ता ने आठवीं कक्षा के छात्रों के लिए उपलब्धि-परीक्षण का निर्माण अत्यन्त जागरुकता से किया गया है । इसमें सरकार से अपेक्षित सभी उद्देश्यों को स्थान दिया गया है । शोधकर्ता ने इस दिशा में मार्गदर्शक की सहायता पूर्ण रूप से ली है ।

प्रश्नों की रचना एवं उद्देश्य :

शोधकर्ता ने परीक्षण के प्रश्नों के निर्माण में पूर्ण सतर्कता एवं भाषागत सभी सिद्धान्तों को ध्यान में रखा है । प्रत्येक प्रश्न के द्वारा किस उद्देश्य की पूर्ति होतीहै । उसका ध्यान रखा गया है । इस परीक्षण में भाषा-उपलब्धि प्रश्नों की रचना की गई है ।

(1) प्रथम प्रश्न के रूप में छात्रों की पाठ्यपुस्तक से एक अनुच्छेद दिया गया । बालकों को यह आदेश दिया गया है कि वे अनुच्छेद को पढ़कर उसके नीचे दिये गये प्रश्नों के उत्तर दिये जाये । इसके अन्तर्गत छः उप-प्रश्न दिये गये हैं और प्रत्येक उप प्रश्न के लिए 2 अंक निर्धारित किये गये हैं । इस प्रकार प्रथम प्रश्न में कुल

छः उप-प्रश्न हैं जिनके लिए कुल 12 अंक निर्धारित है । इस प्रश्न से छात्रों की अर्थ-ग्रहण शक्ति की जाँच करने का उद्देश्य निहित है ।

(2) द्वितीय प्रश्न छात्रों की पाठ्यपुस्तक के आधार पर दिया गया है । इस प्रश्न में तीन उप-प्रश्न लघु उत्तर देने के लिए दिये गये हैं । इसमें से छात्रों को केवल दो ही प्रश्नों का उत्तर संक्षेप में लिखने का आदेश दिया गया है । प्रत्येक प्रश्न के लिए 5 अंक निर्धारित है । इस संपूर्ण प्रश्न के लिए 10 अंक निर्धारित किये गये हैं । ज्ञान (knowledge) संबंधी उद्देश्य की पूर्ति करना इस प्रश्न का उद्देश्य है ।

(3) तृतीय प्रश्न के रूप में छात्रों की पाठ्यपुस्तक में से कविता का एक भाग दिया गया है । छात्र इस कविता के भाग को पढ़कर अर्थ लिखना है । छात्रों की समालोचना शक्ति तथा अभिव्यक्ति का परीक्षण करना इस प्रश्न का उद्देश्य है । इसके साथ साथ छात्रों की कल्पना-शक्ति एवं कविता की रसानुभूति आदि शक्तियों का परीक्षण इसके द्वारा किया गया है । इस संपूर्ण प्रश्न के लिए 10 अंक निर्धारित है ।

(4) प्रश्न में पाँच उपमद (Sub. Items) हैं । प्रथम उप-मद के द्वारा छात्रों के व्याकरण संबंधी ज्ञान का परीक्षण किया गया है । इस मद से छात्रों के वाक्य विन्यास, प्रत्यय प्रयोग, लिंग व्यवस्था आदि की जाँच की गई है ।

द्वितीय मद (Second Item) के द्वारा वचन का ज्ञान, तृतीय उप-मद के द्वारा विपरीत अर्थ का ज्ञान, चतुर्थ उप-मद के द्वारा उच्चारण का ज्ञान और पंचम उप-मद के द्वारा छात्रों की मौलिक अभिव्यक्ति ज्ञान का परीक्षण किया गया है ।

इस प्रश्न (अ) भाग के लिए 5 अंक निर्धारित है । प्रश्न के (आ) भाग में पाँच मद हैं जिनके लिए 10 अंकों का निर्धारित हैं । इस भाग से छात्रों के वचन सम्बन्धी ज्ञान का परीक्षण किया गया है ।

इसी प्रश्न के उप-भाग(इ) के द्वारा छात्रों के विपरीत अर्थ ज्ञान की जाँच की गई है । जिनके लिए 8 अंक निर्धारित किये गये हैं । प्रत्येक मद के लिए 2 अंक दिये गये हैं ।

उप-भाग(ई) में चार मद हैं प्रत्येक मद के लिए 2 अंक निर्धारित है । इस प्रकार पूरे (ई) भाग के लिए 8 अंक निर्धारित है । इस उपभाग के द्वारा छात्रों के उच्चारण ज्ञान की जाँच की गई है ।

उप-भाग(उ) से छात्रों की मौलिक वाक्य रचना करने की कौशल की जाँच की गई है । इसमें पाँच शब्द दिये गये हैं । प्रत्येक शब्द को वाक्य में प्रयोग करना है । प्रत्येक सही वाक्य प्रयोग के लिए 2 अंक निर्धारित है । इस प्रकार कुल 10 अंक इस भाग के लिए निर्धारित है ।

(5) पंचम प्रश्न में चार मद है । ये मद छात्रों की पाठ्यपुस्तक के आधार पर ही दिये गये हैं । इनके द्वारा छात्रों की स्मृति, पुस्तकीय ज्ञान एवं अभिव्यक्ति की जाँच की गई है । इन चार मदों के लिए 8 अंक निर्धारित हैं ।

(6) षष्ठ प्रश्न में चार वाक्य हैं जिनका निर्माण भी पाठ्यपुस्तक के आधार पर हुआ है । इन वाक्यों के द्वारा छात्रों के पुस्तकीय ज्ञान एवं तर्कशक्ति की जाँच की गई है । इन चार वाक्यों के लिए 4 अंक निर्धारित हैं ।

(7) सप्तम प्रश्न अनुवाद सम्बन्धी हैं । इसमें पाँच तेलुगु के वाक्य दिये हैं जिनके लिए 15 अंक निर्धारित हैं । कठिनाई की दृष्टि से इस प्रश्न के लिए अधिक

अंकों का निश्चित निर्धारण किया गया है । इस प्रश्न के द्वारा छात्रों के अर्थग्रहण, वाक्य विन्यास, मौलिकता एवं अभिव्यक्ति का परीक्षण किया गया है ।

भाषा उपलब्धि-परीक्षण में कभी कभी एक ही मद या अंश में एक से अधिक उद्देश्यों की पूर्ति भी हो सकती है कारण यह है कि भाषा का परीक्षण स्वयं एक सामूहिक प्रतिक्रिया है । जिस प्रकार भाषा का अध्यापन किसी एक ही उद्देश्य को आधार मानकर नहीं किया जा सकता है उसी प्रकार उसका परीक्षण भी उतना संभव नहीं है ।

प्रस्तुत उपलब्धि-परीक्षण में भाषा-परीक्षण के हर क्षेत्र से प्रश्न चुने गये हैं और आन्ध्र प्रदेश सरकार से प्रतिपादित उद्देश्यों का ध्यान पूरा पूरा रखा गया है । प्रश्न रचना के औचित्य की दृष्टि से यह परीक्षण छात्रों की भाषा उपलब्धि प्राप्त करने में अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हुआ है । भाषा की दृष्टि से भी यह परीक्षण बहुत ही सरल एवं सुगम है । छात्रों को समझने के लिए प्रत्येक प्रश्न के सामने निर्देश दिये गये हैं । इसके निर्माण में कठिन नियम (Difficulty value) का भी ध्यान रखा गया है ।

उपलब्धि-परीक्षण का प्रशासन :

प्रस्तुत उपलब्धि-परीक्षण में छात्रों को लिखने के लिए एक घण्टे का समय दिया गया है । आन्ध्र प्रान्त में पढ़नेवाले आठवीं कक्षा के छात्रों पर इसका आयोजन हुआ है । छात्रों को सरकारी, जिला परिषद्, नगर-पालित, निजी एवं संस्थागत पाठशालाओं में से चुना गया है । प्रत्येक जिले में चार पाठशालाओं को चुना गया है । उनमें से दो नगरीय और दो ग्रामीय पाठशालायें सम्मिलित हैं । नगरीय पाठशालाओं में एक छात्रों की पाठशाला और दूसरी छात्राओं की पाठशाला का चयन किया गया उसी प्रकार ग्रामीय पाठशालाओं का भी चयन किया है गया है । छात्र हर क्षेत्र से आते हैं और उनका स्तर भी उच्च, सामान्य

और निम्न होता है । इसलिए इन सब विषयों को दृष्टि में रखकर इस परीक्षण का निर्माण एवं प्रशासन किया गया है । सब छात्रों को समान समय दिया गया है । नकल की प्रवृत्ति को रोकने के लिए शोधकर्ता ने स्वयं ~~मैं~~ पर्यवेक्षण किया है । इसको चित्र संख्या : (1) में देखा जा सकता है । प्रत्येक कक्षा में केवल 30 छात्रों को ही परीक्षण के लिए लिये गये हैं जिनसे परीक्षण में सुविधा एवं छात्रों को अनुचित लाभ उठाने की संभावना नहीं होती है । परीक्षण का निरीक्षण करते समय छात्रों के लेखन सम्बन्धी गलतियों को सम्बन्धित हिन्दी अध्यापक को बताया गया है । इसको चित्र संख्या : (2) में देखा जा सकता है । अध्यापक के साथ साथ किसी अमुक लेखन की गलती को अगर छात्र बार-बार करता है तो उसको शोधकर्ता ने व्यक्तिगत रूप से सुधारने का प्रयत्न किया है । जिसको चित्र संख्या (4) में देखा जा सकता है । इस प्रकार प्रत्येक जिले से 120 छात्र-छात्राओं के हिसाब से कुल 960 छात्र-छात्राओं का चयन संपूर्ण आन्ध्र प्रान्त से किया गया है ।

अंक प्रदान के सिद्धान्त :

उपलब्धि परीक्षण में अंक प्रदान का भी एक महत्वपूर्ण भाग है । इसके आधार से ही छात्रों की उपलब्धि स्तर का मूल्यांकन होता है । यह परीक्षण कुल 100 अंकों का है । प्रत्येक प्रश्न को अंक प्रदान करने उन प्रश्नों की कठिनाई, प्रकार एवं माप आदि का ज्ञान रखकर किया गया है । अशुद्ध उत्तर के अंकों को शुद्ध उत्तर के अंकों से नहीं निकाला गया हैं क्योंकि आन्ध्र प्रदेश सरकार भी एस0 एस0 सी0 परीक्षा में इसका पालन नहीं कर रही है । आन्ध्र प्रदेश सरकार से आयोदित अंक प्रदान नियम के अनुसार शोधकार्य/ ने छात्रों को अंक प्रदान किया है, जो निम्न प्रकार है ।

60 से अधिक प्रथम श्रेणी

50-55 द्वितीय श्रेणी

20-49 तृतीय श्रेणी

20 से कम अनुत्तीर्ण

हिन्दी में उत्तीर्ण होने के लिए कम से कम 20 अंक प्राप्त करना अनिवार्य है । हिन्दी के प्राप्तांकों को समय समय पर सरकार घटा रही है क्योंकि छात्र इस विषय में अधिक संख्या में अनुत्तीर्ण हो रहे हैं । आन्ध्र प्रान्त के छात्र प्रधानतः अधिक अनुत्तीर्ण हो रहे हैं । अंकों के घटाने की इस नीति में आंध्र प्रदेश सरकार का दृष्टिकोण उचित प्रतीत नहीं होता है ।

उपलब्धि-परीक्षण के आधार से छात्र किन किन अंशों में कमज़ोर एवं योग्य हैं इसकी चर्चा अगले अध्याय में की गयी है ।

4 मौखिक साक्षात्कार : (oral Interview)

उपर्युक्त उपलब्धि परीक्षण के अतिरिक्त शोधकर्ता ने प्रत्येक जिले के नगरीय तथा ग्रामीय छात्र-छात्राओं का मौखिक साक्षात्कार भी किया । वास्तव में देखा जाये तो शिक्षा और मनोविज्ञान में मौखिक साक्षात्कार का एक महत्वपूर्ण स्थान है । साक्षात्कार एक जटिल और गत्यात्मक प्रक्रिया है । साक्षात्कार की स्थिति में एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के विचारों एवं भावों से पूर्णतः अवगत होता है । इस क्रिया का प्रधान उद्देश्य तथ्य संकलन है । इसके माध्यम से किसी भी व्यक्ति या समुदाय से मिलकर या बातचीत कर तथ्य संग्रह कर लिया जाता है । बादमें इसको लिपिबद्ध किया गया है ।* When the Interviews are not recorded by tape or other electronic device, It will be necessary for the Interviewer to take written notes, either during the Interview or immediately thereafter (2)

विद्यालयों में छात्रों की मानसिक तत्परता, अभिरुचि, अभिप्रेरणा, आदतें, पारिवारिक पृष्ठभूमि, वातावरण तथा व्यक्तिगत्व आदि के विषय में तथ्यों का संकलन साक्षात्कार द्वारा ही होता है ।

शैक्षिक परीक्षण में साक्षात्कार की दो प्रधान विधियाँ हैं ।

(1) निर्दिष्ट साक्षात्कार (Directive Interview)

(2) अनिर्दिष्ट साक्षात्कार(Non-Directive Interview)

(1) निर्दिष्ट साक्षात्कार में छात्रों के परीक्षण के अंक देखना, साक्षात्कार करके उनकी इच्छाओं, रुचि आदि के बारे में पूछना - ये सब इसके अंतर्गत आते हैं । साथ ही इसमें छात्रों की सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थितियों की जानकारी भी प्राप्त करते हैं ।

(2) अनिर्दिष्ट साक्षात्कार में घुमा-फिराकर प्रश्न किये जाते हैं । और छात्रों की अभिरुचियों आदि को अप्रत्यक्ष रूप से जान लेते हैं ।

उद्देश्य :

मौखिक साक्षात्कार की आवश्यकता उस समय होती है जब कि शोधकर्ता लिपिबद्ध शोध-सामग्री के अतिरिक्त उत्तर प्राप्त करना चाहता है । वास्तव में देखा जाये तो यह स्पष्ट विदित होता है कि व्यक्तिगत रूप से मूल्यांकन जितना स्पष्ट होता है उतना अप्रत्यक्ष रूप से नहीं । जिसके अनेक कारण हो सकते हैं ।

मौखिक साक्षात्कार में छात्रों को अपना उत्तर लिपिबद्ध करने की समस्या नहीं रहती है और वे निर्भय होकर स्वतंत्र रूप से प्रकट कर सकते हैं । शोधकर्ता को भी बाल-मनोविज्ञान की सहायता से स्वयं छात्रों के उद्देश्यों को उनके हाव-भाव से अधिक ग्रहण करने की संभावना होती है ।

शोधकर्ता ने 8वीं कक्षा के छात्रों को हिन्दी सीखते समय किन परिस्थितियों का प्रभाव उनपर पड़ता है इसका अध्ययन करना इस मौखिक-साक्षात्कार का मुख्य उद्देश्य है ।

साक्षात्कार-विषय :

प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकर्ता ने हिन्दी के प्रति छात्रों के दृष्टिकोण को पहचानने के लिए निर्दिष्ट साक्षात्कार-विधि को अपनाया है । इसके द्वारा छात्रों की पारिवारिक पृष्ठभूमि, व्यक्तिगत, आदतें, हिन्दी का वातावरण, रुचि, अभिप्रेरणा, हिन्दी सीखने की सुविधाएँ तथा भाषा-अधिगम सम्बन्धी कठिनाइयों से सम्बन्धित रखनेवाले प्रश्न पूछे हैं । कुछ ऐसे भी प्रश्न पूछे गये हैं जिनका सम्बन्ध छात्रों का पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तक तथा शिक्षण-विधि, माध्यम आदि से है ।

साक्षात्कार का आयोजन :

शोधकर्ता ने प्रत्येक जिले से 40 छात्र-छात्राओं को साक्षात्कार के लिए चुना है जो हिन्दी में उपलब्धि परीक्षण के अनुसार कमज़ोर हैं । इस प्रकार आन्ध्र प्रान्त के आठ जिलों से कुल 320 छात्र-छात्राओं का मौखिक साक्षात्कार किया गया है । शोधकर्ता ने प्रत्येक जिले के 40 छात्र-छात्राओं में से 20 छात्र-छात्राओं को नगरीय क्षेत्रों से और 20 छात्र-छात्राओं को ग्रामीय क्षेत्रों से लिया है ।

मौखिक-साक्षात्कार उन छात्र-छात्राओं से किया गया है जो उपलब्धि-परीक्षण में सबसे कम अंक प्राप्त किये हैं । प्रत्येक नगरीय एवं ग्रामीय पाठशालाओं से ≅ 10 के हिसाब से छात्र-छात्राओं का चयन किया गया है । प्रायः यह देखा गया है कि सबसे कमज़ोर छात्र ही अधिक मात्रा में हिन्दी सीखने से सम्बन्धित समस्याओं को बताने में सक्षम होते हैं । मौखिक साक्षात्कार के छात्रों को चित्र संख्याः (3) में देखा जा सकता है ।

साक्षात्कार को अधिक सत्यनिष्ठ एवं वस्तुनिष्ठ बनाने के उद्देश्य से साक्षात्कार में पूछे जानेवाले 30 प्रश्नों को छात्रों की रुचि, अभिप्रेरणा, वातावरण, पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तक एवं शिक्षण विधियों को दृष्टि में रखकर पूछा गया है ।

प्रत्येक छात्र के लिए 5 मिनट का समय दिया गया है । इस प्रकार प्रत्येक पाठशाला के दस कमज़ोर तथा हिन्दी में पिछड़े हुए छात्र-छात्राओं के मौखिक साक्षात्कार के लिए लगभग एक घण्टे का समय लिया गया है ।

मूल्यांकन :

प्रथम शोधकर्ता ने हर जिले के 40 छात्रों के उत्तर का मूल्यांकन किया है और बाद में सभी आठ जिलों के 320 छात्रों के उत्तरों का संपूर्ण मूल्यांकन प्रतिशत में किया है । शोधकर्ता ने आगामी अध्याय में प्रत्येक प्रश्न के अत्यधिक छात्र-छात्राओं की संख्या तथा प्रतिशत् की चर्चा विस्तारपूर्वक किया है ।

इस साक्षात्कार से शोधकर्ता को तथ्य संकलन में पर्याप्त मदद मिली है ।

शोध सामग्री का आयोजन :

शोधकर्ता ने अपना शोध विषय "आन्ध्र प्रान्त के 8वीं कक्षा के तेलुगु भाषी छात्रों के हिन्दी अधिगम सम्बन्धी समस्याओं एवं कठिनाइयों का शोधपूर्ण अध्ययन" में यह शोध विधि बहुत ही सार्थक सिद्ध हुई है ।

शोधकर्ता ने आन्ध्र प्रान्त में स्थित 100 हिन्दी अध्यापकों, से व्यक्तिगत साक्षात्कार किया और उनसे उपर्युक्त, शोध विषय से संबंधित चर्चा की है ।

इस व्यक्तिगत साक्षात्कार से प्राप्त मान्य अनुभवी हिन्दी अध्यापकों के विचार, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा में आयोजित सेमिनार में भाग लिये विद्वानों के विचारों तथा माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से संचालित एस0 एस0 सी0 परीक्षा में आन्ध्र प्रान्त के छात्रों से प्राप्त हिन्दी अंकों को दृष्टि में रखकर एक प्रश्नावली का निर्माण किया गया है और इसको आन्ध्र प्रान्त के विभिन्न संस्थाओं में काम करनेवाले 480 हिन्दी अध्यापकों को डाक के द्वारा भेजा गया है और उनके विचारों का विश्लेषण आगामी अध्यायों में किया गया है ।

इसके अतिरिक्त शोधकर्ता ने आन्ध्र प्रान्त के 960 छात्रों की भाषा उपलब्धि-परीक्षण विभिन्न जिलों में स्थित नगरीय एवं ग्रामीय छात्र-छात्राओं का लिया है । इस परीक्षण के आधार से छात्र हिन्दी विषय के किन किन क्षेत्रों में कमज़ोर हैं इसका विशेषण वैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत किया है ।

उपर्युक्त दोनों साधनों के साथ साथ शोधकर्ता ने उन छात्रों की मौखिक परीक्षा ली हैं जो उपलब्धि परीक्षण में कम अंक प्राप्त किये हैं । निम्न अंक प्राप्त 40 छात्रों को प्रत्येक जिले के नगरीय एवं ग्रामीय क्षेत्र से लेकर उनका मौखिक-साक्षात्कार किया गया है । इस साक्षात्कार में छात्रों के भाषा अधिगम में पिछड़े होने के कारणों को विभिन्न परिस्थितियों को दृष्टि में रखकर प्रश्न पूछे गये हैं । इनको शोधकर्ता ने बाद में लिपिबद्ध किया है । अधिक संख्यक छात्रों के उत्तर को स्वीकार किया गया है । साक्षात्कार प्राप्त छात्रों के उत्तर को प्रतिशत में विश्लेषण किया गया है ।

निष्कर्ष :

इस प्रकार शोधकर्ता के द्वारा आयोजित उपर्युक्त शोध-साधन शोधकार्य में महत्वपूर्ण स्थान ग्रहण किये हैं । इनसे शोधकार्य वैज्ञानिक बन गया है ।

इस प्रकार शोधकार्य में प्रयुक्त इन वैज्ञानिक साधनों का विशिष्ट योगदान रहा है ।

इन साधनों से प्राप्त विषय विश्लेषण को आगामी अध्याय में विस्तार रूप से दिया गया है ।

***

3

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

(1) उमेश प्रसाद सिंह : शैक्षिक मापन एवं निर्देशन,
विनोद पुस्तक मन्दिर,
आगरा, पृ0 92

(2) बेस्ट, जे· डब्यू : रिसर्च इन एडूकेशन, थर्ड एडीशन,
अगस्त, 1977
पृ0 183

...